B.A. Part-I Hons session 2019 -20
Girija Uranw Deptt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

फ्रायड का स्वप्न सिद्धांत या स्वप्न का इच्छापूर्ति का सिद्धांत (Wishfulfilment theory of Dream)

(the Interpretation of dream)

नामक फ्रायड की पुस्तक सन् 1900 में प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने विशद व्याख्या प्रस्तुत की कि हम स्वप्न क्यों देखते है? इस पुस्तक में उन्होंने स्वप्नों की व्याख्या मनोवैज्ञानिक ढंग से करते हुए इस बात पर काफी बल दिया कि स्वप्नों के माध्यम से हमारी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति होती है। इसीलिए उनके सिद्धान्त को कभी-कभी इच्छा पूर्ति का सिद्धांत भी का जाता है। अपने सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या करते हुये उन्होंने लिखा है कि प्रायः व्यक्ति में अनेक इच्छाएं जन्म लेती रहती है जैसे किसी सुन्दर युवती को देखकर उसी तरह की युवती से शादी की इच्छा होती है तो कभी किसी की अच्छी गाड़ी देखकर वैसी ही गाड़ी रखने की इच्छा होती है तो कभी किसी का अच्छा वस्त्र, कलम, घड़ी, जूते आदि देखकर वैसी ही वस्तुओं को पाने की इच्छा होती है। परन्तु सभी इच्छाओं की पूर्ति सम्भव नहीं होती। कारण कि सभी इच्छाओं की पूर्ति के लायक हमारी सामाजिक आर्थिक स्थिति नहीं होती। अतः हमें अपनी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है। भौतिक इच्छाओं की कुछ हद तक सम्भव भी होती है परन्तु लैंगिक इच्छाओं की पूर्ति प्रायः नहीं होती है क्योंकि इन पर तरह-तरह के सामाजिक प्रतिबन्ध होते हैं। जिससे इनका दमन अधिक होता है। दमन की क्रिया इस तरह होती है कि चेतन स्तर पर व्यक्ति को

Scanned with CamScanner

इसका पता नहीं चलता है। व्यक्ति की ये दमित इच्छाएं चाहे वे लैंगिक हों या गैर लैंगिक सीधे अचेतन में चली जाती है। अचेतन अतृप्त इच्छाओं का निवास स्थल है या उनका भण्डार होता है। unconscious is the reservoir of unsatisfied desires. अचेतन में जाकर दमित इच्छाएं मरती नहीं है या बिलकुल निष्क्रिय नहीं हो जाती है। इनकी विशेषता होती है कि ये सक्रिय रहती है तथा अपनी तृप्ति चाहती है।

जाग्रतावस्था में ईगो सक्रिय रहता है और अचेतन की दमित इच्छाओं पर शासन करता है। वह जानता है कि ये लैंगिक एवं अनैतिक है या पूरा होने लायक नहीं है अतः तृप्त नहीं होने देता है। लेकिन सुषुप्तावस्था में यह स्थिति नहीं रहती। निद्रावस्था में अचेतन इच्छाओं पर ईगो का प्रतिबन्ध या शासन कमजोर या शिथिल पड़ जाता है। ऐसी हालत में अचेतन की दमित इच्छाएं मौका का फायदा उठाती है एवं ईगो को धोखा देकर बाहर निकलती है जिसका परिणाम होता है कि हम स्वप्न देखते हैं। परन्तु यहाँ एक मुख्य बात है कि दमित इच्छाएँ ठीक उसी रूप में बराबर नहीं निकल पाती है क्योंकि वैसी हालत में भी कुछ न कुछ ईगो का प्रतिबन्ध बना ही रहता है। पर, जब वे वेश बदल कर या प्रतिकों के माध्यम से बाहर निकलती है तो उसे कोई खास आपत्ति नहीं होती। इन्होंने अपने सिद्धांत में कुछ स्वप्न प्रतिकों का वर्णन किया है और बताया है कि ये प्रतिक विश्वजनीन होते हैं। स्वप्न में इन्हीं प्रतिकों

Scanned with CamScanner

के माध्यम से दिखाई देते हैं जिससे हमारे स्वप्न का अर्थ आसानी से समझ में नहीं आता। इन्होंने स्वप्न के दो विषय की चर्चा की है (अ) व्यक्त विषय (ब) अव्यक्त विषय। जो स्वप्न हम देखते हैं। वह व्यक्त विषय हुआ तथा उसके पीछे छिपे हुए वास्तविक कारण या दमित इच्छा को स्वप्न का अव्यक्त विषय कहते हैं। स्वप्न में अव्यक्त विषय कुछ मनोरचनाओं के द्वारा व्यक्त विषय में आ जाता है जिसे स्वप्न कार्य कहते हैं। इस तरह के स्वप्न रचनाओं में संक्षेपीकरण, विस्थापन, नाटकीकरण, प्रतीकीकरण एवं परिवर्ति विस्तर प्रमुख हैं।

उन्होंने जोर देकर कहा है कि कोई भी स्वप्न निरर्थक तथा अनुपयोगी नहीं होते हैं बल्कि सार्थक एवं उपयोगी होते हैं। अन्य शब्दों में "All dreams have a cause, significance and economy." कुछ विद्वानों ने स्वप्न को नींद का बाधक या घातक बताया है परन्तु फ्रायड ने स्वप्न को नींद का अभिभावक कहा है। "Dream is the guardian of sleep." स्वप्न नींद में बाधा नहीं सहायता पहुँचाती है।

Scanned with CamScanner